अध्याय - एकोनविंश

उद्‌बोधन

(सार छंद)

माघ मास आ गया सर्वत:
शीतलता है छायी ।
सप्तसप्ति[1] भी त्याग तिग्मता[2]
बने भूत सुखदायी ॥
उत्तराभिमुख संज्ञापति[3] को
कुरूवर ने अवलोका ।
आगत है वह काल जिस लिए
था संज्ञा[4] को रोका ॥1॥

स्नेह सिक्त अति दृष्टि परिजनों
पर कौरव ने डाली ।
शमित दवाग्नि देखता है ज्यों
रक्षित उपवन माली ॥
सबके कर स्वीकार नमन को
आशिष दिया हृदय से ।
सब थे चकित वदन पर उनके
नवल विभा समुदय[5] से ॥2॥

बोले कुरू माधव अट्ठावन
दिवस लगे हैं युग से ।
मानस रण था अधिक घोरतर
भारत के संयुग[6] से ॥
मुझसे अधिक यंत्रणा मधुरिपु[7]
किस योद्धा ने भोगी ।
आजीवन स्वधर्म का पालन
किस विधि है उपयोगी ॥3॥

1. सूर्य	5. उदय
2. तीक्ष्णता	6. युद्ध
3. सूर्य	7. श्री कृष्ण
4. चेतना	

रहे धरागत किन्तु कभी रज[1]
तुम्हें न छू भी पाया ।
पूर्व जन्म में उरग[2] शाप वश
वपु ने यह दुख पाया ॥
उऋण हुए कुरू भू से पीड़ा
सहकर लब्ध अनघता[3] ।
दग्धदोष कर गई तुम्हें हे
वसु4! परिताप सघनता ॥4॥

कहा कृष्ण ने अपगत[5] किल्विष[6]
इसी जन्म में होकर ।
भूरिधाम[7] जाना है तुमको
अब स्वधाम भव[8] खोकर ॥
यदपि विशुद्धात्मा हैं सारे
अन्तःकरण मलिनता ।
कर्म विकर्म कराती नर से
विस्मृत आत्म अखिलता ॥5॥

सहकर भी कटुवचन हस्तिपुर
को मैं त्याग न पाया ।
नहीं विभीषण वत तज तम को
हरिपद नेह लगाया ॥
बांधा अपना भाग्य स्वर्णमय
सिंहासन पाये से।
जीवन पथ पर चले राजमद
मैं हम भरमाए से ॥6॥

1. धूल, दोष अपवित्रता, रजोगुण
2. सर्प
3. निष्पापता
4. भीष्म (देव योनि विशेष)
5. दूर हुआ
6. पाप
7. प्रखर तेज वाले
8. संसार

लौह श्रृंखलाओं ने परित:[1] ,
मुझको जकड़ रखा है ।
कुरू के जर्जर सिहांसन ने,
जैसे पकड़ रखा है ।
नहीं मोह पीड़ित इस कुल में,
मात्र अंबिकानंदन ।
मेरे भी अंतर का इसने,
निसदिन किया निकृंतन[2] ॥7॥

स्वयं संवरण[3] से नरपति जिस,
कुल के रहे प्रवर्तक ।
उसपर छाया महामोह का,
जैसे घन संवर्तक[4] ।
लोभ और मद का न संवरण[5],
जो नर कर पाता है ।
वरण न करतीं उसे सिध्दियाँ,
अवनति ही पाता है ॥8॥

नहीं कथन यह सत्य तुम्हारा
ज्ञात मुझे कुरू सत्तम[6] ।
शासन तंत्र तुम्हारा भारत
भर में रहा अनुत्तम[7] ॥
भरत समान चलाया भारत[8] !
तुमने कुरू शासन को ।
कौन बचा सकता था अथवा
विलयन से आसन को ॥9॥

1. चारों ओर	5. आत्मनियंत्रण, आवरण, छिपाव
2. काटना, कुतरना	6. कुरू श्रेष्ठ
3. अजमीढ़ के पुत्र जिनका विवाह विवस्वान की पुत्री तपती से हुआ संवरण के ही पुत्र कुरू थे जा इस वंष के पूर्व पुरूष हैं।	7. सर्वोत्तम
4. प्रलय कालीन मेघ का नाम	8. हे भरत वंशी

तुम विराट वट वृक्ष दे रहे
चिर से शीतल छाया ।
नव कुरू खग तुम पर थे आश्रित
निर्भय काल विताया ॥
चित्रांगद में थी उद्धतता
अनुज विलास मना था ।
कुरू दीपक वे बुझे शीघ्र ही
छाया तिमिर घना था ॥10॥

व्यास तेज उद्भूत अम्बिका
के सुत अनयन आए ।
अम्बालिकातनय पाण्डुरता
थी कुछ रोग छिपाए ॥
खड़े रहे उत्तुंग मेरूवत
सब विधि कुरूहितकारी ।
उन्नतिशील रहें चिर तक कुरू
के हर्षित नर नारी ॥11॥

दुर्वह शासन भार उठाए
विगतखेद प्रणधारी ।
तुम हो मुझसे श्लाघ्य क्षणिक था
में गोवर्धनधारी ।
मैं केवल गोपाल[1] आप हैं
गो द्विज के उपकर्ता[2] ।
मैं नवनीतहरणपटु[3] श्रीमन्
हैं नरपतिमदहर्ता ॥12॥

1- गायों का पालक
2- उपकार करने वाला
3- मक्खन

मैं सारथि हूं आप अतिरथी
सेना पति कुरू बल के ।
ज्ञानो दधि तप वृद्ध सदा ही
वंदनीय युग दल[1] के ॥
ब्रहमचर्य आदर्श आप हैं
मैं बहुश: परिणेता[2] ॥
मैं रणछोड़ आप रहते हैं
गुरू अभिमुख भी जेता ॥13॥

आत्म पराभव की निज अरि को
युक्ति बता सकता है ।
कौन त्याग की इस काष्ठा[3] तक
सुर, नर जा सकता है ॥
भूषित रहती धरा त्याग तप
और शौर्य प्रतिमा से ।
यदि न गिराता स्वार्थ समर में
नरता को गरिमा से ॥14॥

कभी बनाए यहां रूधिर सर
भार्गव[4] ने तर्पण को ।
वहीं पुन: एकत्र लक्षश:
योध्दा असु[5] अर्पण को ॥
क्यों कुरूक्षेत्र धरा रहती है
मनुज रक्त की प्यासी ।
क्यों हिंसा का दास बन रहा
मनुसुत वध अभिलाषी ॥15॥

1- कौरव पाण्डव दोनों दल
2- विवाह करने वाला
3- सीमा, पराकाष्ठा
4- परशुराम
5- प्राण

नहीं धरणि[1] का ष्दोष भीष्म कुछ
वह तो सदा क्षमा है ।
मानव मनोभूमि पर छायी
गहरी किन्तु अमा[2] है ॥
अस्तविवेक मित्र[3] पहले ही
अमल भाव शशि गत है ।
मोह निषा मैं अहंकार मद
प्रेरित नर अघरत[4] है ॥16॥

भाव जगत का यही तिमिर[5] फिर
उतर भूमि पर छाता ।
दृष्य जगत उत्थित सुसूक्ष्म से
नहीं शून्य से आता ॥
उठता है संकल्प भाव से
उससे क्रिया समुत्थित ।
आता है परिणाम बाद मैं
होकर कार्य अनुष्ठित ॥17॥

बहुत समय से चला आ रहा
मन मैं हिंसा पोषण ।
तव प्रकटी शरीर मैं यह वन
दुर्निवार[6] अतिरोषण[7] ॥
क्रिया समूह हुआ परिचालित
सबथे प्रतिशोधातुर ।
वसुधा नहीं पिपासु वराकी[8]
वह तो पीड़ित आतुर ॥18॥

1. पृथ्वी	5. अन्धकार
2. अमावस्या	6. जिसका निवारण कठिन हो
3. सूर्य	7. अत्यन्त क्रोध वाली
4. पाप में लगा	8. बेचारी

यहां स्वयंवर भी बन जाते
कारण कटु विग्रह[1] के ।
अहं खोजता नित्य मार्ग बस
कल्पित अरि निग्रह[2] के ।
राजसूय भी बन जाते हैं
बहु विवाद के कारण ।
नहीं अन्य उत्कर्ष मनुजमन ।
कर पाता है धारण ॥19॥

हुए बहुत असहिष्णु अहेतुक[3] ।
नृपगण शक्ति प्रदर्शन ।
क्षात्र तेज का इस विधि होता
भूपर निंद्य[4] निदर्शन[5] ।
त्रेता में थी त्रस्त मनुजता ।
कारण रही असुरता ।
द्वापर में दे रही यंत्रणा ।
नरता को ही नरता[6] ॥20॥

अर्थ और पद दास बने हैं ।
देखो यहां अमर भी ।
अनय पक्षधर बने खड़े थे ।
करने उग्र समर भी ।
सरस्वती के पुत्रों की भी ।
निष्ठा क्रीत[7] हुई है ।
धन छल बल की ज्ञानार्जव[8] पर
गर्हित[9] जीत हुई है ॥21॥

1. उपद्रव, लड़ाई	6. मनुष्यता, मानवता
2. नियंत्रण	7. खरीदी गई
3. बिना कारण	8. सरलता
4. निंदनीय	9. निन्दित
5. उदाहरण	

मूक रहा पांचाल कंस जब
उभरा था मथुरा मैं ।
नरक[1] हुआ बलवान मगध तब
था प्रसुप्ति मधुरा मैं ॥
किए अमित अतिचार[2] प्रजा पर
दुर्दम कामातुर ने ।
की सोलह सहस्त्र बालाएं
बन्दी नरका सुर ने ॥22॥

निज निज सीमा खींच स्वार्थ रत
भारत के जनपद हैं ।
अत: आततायी दुर्मद हो
बन जाते आपद[3] हैं ॥
कुरू लड़ते आ रहे पूर्व में
दुर्धर[4] पांचालों से ।
कौशल वत्स रहे परिपीड़ित
कटु मागध चालों से ॥23॥

देख रही है दुखी भरत भू
बल संपदा क्षरण को ।
एक अहं उत्सुक रहता हैं
अन्यज[5] अहं हरण को ॥
काल यवन था इधर समुद्यत
भारत श्री लेने को ॥
वाणासुर था उधर शयेनवत[6]
फैलाए डैने को ॥24॥

1. नरकासुर	4. नियंत्रण में न आने वाले
2. मर्यादा भंग करना	5. दूसरे से उत्पन्न
3. विपदा	6. बाज के समान

साथ खड़े थे यदि नरपतिगण
कुरू जनपद ध्वज नीचे ।
स्वार्थ महत्वाकांक्षा ही थी
इस निष्ठा के पीछे ॥
जीते कुरू तो हम भी होंगे
अनयपंथ अधिकारी ।
स्वैराचार[1] असंभव जीते
यदि पाण्डव व्रतधारी ॥25॥

किया महोद्यम मैंने पर टल
सका न युद्ध विनाशी ।
क्योंकि कर्मफल अमिट नियति का
वही उग्र अधिशासी[2] ॥
पंचग्राम अर्पण का भी लघु
त्याग नहीं कर पाया ।
स्वयं सुयोधन ने हठ पूर्वक
यह संग्राम बुलाया ॥26॥

आप और आचार्य रण विरत
यदि हठकर हो जाते ।
चिर निद्रा में अगणित योद्धा
तो न यहां सो जाते ॥
किन्तु राज निष्ठा की सीमित
करके जो परिभाषा ।
चले आप दोनों वह केवल
पुस्तक की थी भाषा ॥27॥

1- स्वच्छंद या निरंकुश रहने वाला
2- शासन करने वाली

कहा भीष्म ने तब कंपित स्वर
केशव मैं था भूला ।
निश्चय और अनिश्चय में मन
मेरा चिरतक झूला ॥
जनपद हित से मैं स्ववंश हित
पृथक नहीं कर पाया ।
मुझे राष्ट्रहित रहा भासता
मात्र नृपति की छाया ॥28॥

कुंठित प्रज्ञा हुई परम जब,
निर्णय था आवश्यक ।
क्यों संशय का उरग बन गया,
विमल मनीषा[1] दंशक ।
क्यों जीता नैराष्य विवश हो,
महासत्वता[2] बैठी ।
धृति[3] सर्वथा अलज्ज नीति भी,
सकल प्रभा खो बैठी ॥29॥

जो अमेय विक्रम विद्या निधि,
कुरूजन का हितकारी
जो था अरिपीड़क खलसूदन
धनुर्वेद अधिकारी ।
जो न जानता पराभूति[4] को,
देता सदा अभय को ।
कैसे सहता रहा अभी तक,
परिजन विहित अनय को ॥30॥

1- बुद्धि
2- महान बल या तेजस्विता
3- धैर्य
4- पराजय, हार

जनपद मात्र नहीं होता है,
छत्र और सिंहासन ।
जननिष्ठा है प्राण राष्ट्र का,
और कुजन[1] अनुशासन ।
रहा विदित यह तथ्य किन्तु क्या,
पालन मैं कर पाया ।
नहीं व्यष्टिहित[2] को समष्टिहित[3],
से ऊपर धर पाया ॥31॥

इन्द्रिय जय से नहीं बन सका,
कोप और मद जेता ।
नहीं साधुता ग्रहण कर सका,
यदपि ऊर्ध्वपथरेता[4] ।
तेज विवर्धित शौर्य प्रखर वस,
मेरा हुआ सुव्रत से ।
विजयी हुआ न सत्य हमारा,
क्षुद्र असार अनृत[5] से ॥32॥

(छंद सरसी)

मुझको अपने बल पौरूष का था अति ही अभिमान।
जिससे प्रेरित किया भूयष:[6] किल्विष[7] का आधान।
जिनसे सीखा धनुष पकड़ना उन पर ही शरपात।
करके मैंने किया षिष्य गुरू नाते पर आघात॥33॥

1. दुष्ट व्यक्ति	5. असत्य
2. व्यक्तिगत हित	6. बार-बार
3. सार्वजनिक हित	7. पाप
4. नैष्ठिक ब्रह्मचारी	

क्या-क्या मैं कर गया विवश फिर देखे क्या-क्या कृत्य ।
बना रह गया मैं आजीवन अपने व्रत का भृत्य[1] ।
जननी कृत अनुरोध न माने, सुनी न प्रजा पुकार ।
कहो कृष्ण मैं धर्म जयी या बैठा व्रत से हार ॥34॥

बोल उठे तब अन्तर्यामी गुरू गौरव का ह्रास ।
तुम से हुआ भीष्म यद्यपि था ऋत[2] में दृढ़ विश्वास ।
करते यदि अभिव्यक्त अस्वीकृति, गुरू से हुए विनीत ।
क्षत्रिय धर्म तुम्हारा कौरव, क्या होता अपनीत[3] ॥35॥

रण मैं भी तुम गुरू के अभिमुख[4], आए साहंकार ।
जैसे करने वहां प्रदर्शित, रण विद्या अधिकार ।
तुमने ही फिर किया प्रथमत:, रण में नीरज[5] नाद ।
और अमर्षशील[6] हो अभिहित[7], गुरूप्रति किये कुवाद[8] ॥36॥

हां केशव संकल्प किया था जन सम्मुख सप्रकाश[9] ।
आज करूंगा बल विक्रम से भार्गव दर्प विनाश ।
अब तक किये प्रदग्ध तृणादिक तुमने केवल राम[10] ।
वह सुकीर्ति प्रसरण पायेगा अब मुझसे उपराम[11] ॥37॥

मेरे सदृश न क्षत्रिय थे तब अब उपजा है भीष्म ।
मम विक्रम सविता[12] का आतप दुस्सह जैसे ग्रीष्म ।
क्षात्र रूधिर तर्पणकारी के उर अर्पित कर बाण ।
मैं भी तर्पण करके दूंगा निज शूरता प्रमाण ॥38॥

1. सेवक	5. शंख	9. व्यक्त रूप से, सार्वजनिक रूप से
2. सत्य, धर्म	6. क्रुद्ध होकर	10. परशुराम
3. दूर ले जाया गया	7. कहे गये	11. शमित होना
4. सामने	8. दुर्वचन	12. सूर्य

दयासिंधु गुरू बोले हंसकर तुम रणार्थ सन्नद्ध ।
हुए भीष्म यह देख मुदित हूं क्षात्र धर्म प्रतिबद्ध ।
नहीं रूष्ट या मलिनानन थे भार्गव रण उपरान्त ।
कहा तुष्ट हूं तव कौशल से तुम संयुगी[1] अभ्रान्त[2] ॥39॥

और कई अवसर आये हैं जब गुरू जय उल्लेख ।
मैंने हो निर्लज्ज किया है भरकर मन उत्सेक[3] ।
फलित हुआ है देखो माधव ममकृत गुरू अवज्ञान[4] ।
झेला जीवन सांध्य काल में शठजन कृत अपमान ॥40॥

होकर भी अविजेय झेलता रहा अवज्ञा घोर ।
शौर्य सानु[5] देखा पहले फिर विषम तितिक्षा[6] छोर ।
नहीं वंश, नय, ऋत के क्षय को बचा सका पुरूषार्थ ।
आज विवश रविपंथ ताकता वयोवृद्ध यह आर्त ॥41॥

(सार छंद)

कदाचार[7] प्रतिकार सुसक्षम,
उदासीनवत् मानव ।
बैठा रहता मौन देखकर,
सम्मुख अविनय दानव ।
तो वह भी दोषी हो जाता,
निंदनीय अपकृत[8] का ।
करें दंड निर्धारित मुररिपु[9],
मुझ सदोश अषुभृत[10] का ॥42॥

1. योद्धा	6. सहन शक्ति
2. सतर्क, कुशल, प्रमाद न करने वाला	7. कुत्सित आचरण
3. घमण्ड	8. अपराध, पाप
4. अवज्ञा	9. श्री कृष्ण
5. शिखर	10. प्राणी

नहीं देवव्रत छू भी सकती,
तुमको कभी विफलता ।
एक तुम्हारे ही कारण यह,
रहा महा वट फलता ।
पली तीन पीढ़ियाँ तुम्हारे,
ही पटु संरक्षण में ।
अनुशान्तनु[1] अन्यथा बिखरता,
यह कुरू जनपद क्षण में ॥43॥

ब्रह्मचर्य को इन्द्रिय निग्रह,
तक करके परिसीमित ।
मात्र अपरिणय[2] से ही समझा,
यह विधान सब निर्मित ।
जो हो जाए अन्तर्मन तक,
नीरस रमणी द्वेषी ।
कैसे वह अशेष नरता का,
होगा परम हितैषी ॥44॥

गदगर्भित[3] हो देह कवच क्या,
रक्षा कर सकता है ।
मात्र सुदृढ़ प्राचीर कुनृपता[4],
को क्या हर सकता है ।
कुरू विप्लव[5] में तुम मत देखो,
वैयक्तिक असफलता ।
क्या कर सकता वैद्य रूग्ण को,
यदि हो काम्य गरलता ॥45॥

1- शान्तनु के बाद
2- विवाह न करना
3- जिसके अन्दर रोग छिपा हो
4- कुशासन
5- उपद्रव

दृष्टिहीन हो नृपति राजसुत,
अविनय से उपहत[1] हो ।
छद्मशुभेच्छु वचन मानित हो,
परिजन स्वार्थ विजित हो ।
चिरविभुक्त बहुभोग सखा की,
विश्रुत[2] हो बलबत्ता ।
कृत्यासम[3] शोणित पानातुर,
क्यों न बने वह सत्ता ॥46॥

केवल निज उन्नयन अपनयन[4],
भीष्म व्यक्ति के वश में ।
नहीं अन्य अपकीर्ति हेतु वह,
उत्तरदायी यश में ।
उद्धव आयु भोग प्राणी के,
बस स्वकर्म के फल हैं ।
अत: करो न विषाद तुम्हारे,
नहीं सुकर्म विफल हैं ॥47॥

आज भान होता है माधव,
विषद् ब्रह्म की चर्या ।
यह तनमन धन से अकाम हो,
संतत् सत्व[5] सपर्या[6] ।
यह हो सकता तभी ब्रह्ममय,
नर इस जग को जाने ।
मणिमाला के मध्य संचरित,
गुप्त सूत्र पहचाने ॥48॥

1. पीड़ित, ग्रस्त	4. पतन
2. विख्यात	5. प्राणी
3. राक्षसी, पिशाची	6. पूजा

पीछे हटते तुम न समर में,
गुरू भी हों प्रतियोधी ।
बन जाता रणछोड़ लोकहित,
यद्यपि सुदम[1] विरोधी ।
कर्म विकर्म मध्य केवल शिव,
परिणामिता[2] निकष[3] है ।
केवल हित है काम्य लोक का,
अस्थिर यश अपयश है ॥49॥

हँसे भीष्म केशव तुम बंधन,
कहाँ मान सकते हो ।
तोड़ प्रतिज्ञा अस्त्र हाथ ले,
युद्ध ठान सकते हो ।
व्यापक हित को देख प्रतिष्ठा,
मैं बिसार देता हूँ ।
इसके निर्णय का कुरूसत्ताम,
नव विचार देता हूँ ॥50॥

प्रण भंजन निज स्वार्थ हेतु ही,
जनता घन किल्विष[4] है ।
लोक अहितकारिणी प्रतिज्ञा,
भी हो जाती विष है ।
जिससे होती भूति[5] भुवन[6] की,
वह आचार प्रयत[7] है ।
ग्राह्य मुझे जगजीव क्षेम कर[8],
कभी अखेद अनृत[9] है ॥51॥

1. जिसका दमन सरल हो	4. पाप	7. पवित्र
2. कल्याणकारी परिणाम वाला भाव	5. कल्याण	8. कल्याणकारी
3. कसौटी	6. लोक	9. असत्य

(रोला)

एक क्रौंच[1] का बेध, स्त्रोत है राम कथा का ।
अपर क्रौंच का वेध, स्त्रोत बस राम[2] व्यथा का ॥
शिव सुत[3] विक्रम जात, असूया प्रेरित नग[4] को ।
भृगु[5] ने कर अनुविद्ध, सिद्ध कर दिया स्वभग को ॥52॥

एक बना शुभ स्त्रोत, काव्य की सुर अपगा[6] का ।
अपर रहा अज्ञात, वृत्त बस गिरि विपदा का ॥
पड़ते ही ऋषि दृष्टि, सृष्टि शुभ हो जाती है ।
साहंकृत[7] यदि कार्य, सकल गरिमा जाती है ॥53॥

(सरसी)

अहंकार वश किया सुकृत[8] भी, बन जाता अपकर्म[9] ।
निरहंकारी की हिंसा भी, हो जाती सद्धर्म ॥
दक्ष प्रजापति कृत अध्वर[10] भी, लाया ध्वंस महान ।
क्योंकि रजोगुण प्रेरित प्रक्रिया, विपदा का आधान ॥54॥

(सार)

तुम हो धर्म प्रवर्तक केशव,
हम केवल अनुसत्तर
हम कर्तापन ग्रसित वृथा ही,
रहते आप अकर्ता ॥
कहाँ नव्यपथ[11] सृजन अनुगमन,
तक हमको दुष्कर है ।
नवसर्जन पटु तुम्हें रीति का,
भंजन नित्य सुकर[12] है ॥55॥

1. पर्वत, पक्षी का नाम	7. अहंकार सहित किया गया
2. परशुराम	8. पुण्य या शुभकर्म
3. कार्तिकेय	9. दुष्कर्म
4. पर्वत	10. यज्ञ
5. परशुराम	11. नवीन मार्ग
6. गंगा	12. सरल